श्री गणेश चालीसा

॥ दोहा ॥

जय गणपति सद्गुण सदन,
कविवर बदन कृपाल।
विघ्न हरण मंगल करण,
जय जय गिरिजालाल॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय गणपति गणराजू,
मंगल भरण करण शुभ काजू।

जय गजबदन सदन सुखदाता,
विश्वविनायक बुद्धि विधाता।

वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन,
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन।

राजत मणि मुक्तन उर माला,
स्वर्ण मुकुट सिर नयन विशाला।

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं,
मोदक भोग सुगन्धित फूलं।

सुन्दर पीताम्बर तन साजित,
चरण पादुका मुनि मन राजित।

धनि शिव सुवन षड़ानन भ्राता,
गौरी ललन विश्व विधाता।

ऋद्धि सिद्धि तव चंवर डुलावे,
मूषक वाहन सोहत द्वारे।

कहौ जन्म शुभ कथा तुम्हारी,
अति शुचि पावन मंगलकारी।

एक समय गिरिराज कुमारी,
पुत्र हेतु तप कीन्हों भारी।

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा,
तब पहुंच्यो तुम धरि द्विज रूपा।

अतिथि जानि कै गौरी सुखारी,
बहु विधि सेवा करी तुम्हारी।

अति प्रसन्न ह्वै तुम वर दीन्हा,
मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा।

मिलहिं पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला,
बिना गर्भ धारण यहि काला।

गणनायक गुण ज्ञान निधाना,
पूजित प्रथम रूप भगवाना।

अस कहि अन्तर्धान रूप ह्वै,
पालना पर बालक स्वरूप ह्वै।

बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना,
लखि मुख सुख नहिं गौरि समाना।

सकल मगन सुख मंगल गावहिं,
नभ ते सुरन सुमन वर्षावहिं।

शम्भु उमा बहु दान लुटावहिं,
सुर मुनिजन सुत देखन आवहिं।

लखि अति आनन्द मंगल साजा,
देखन भी आए शनि राजा।

निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं,
बालक देखन चाहत नाहीं।

गिरजा कछु मन भेद बढ़ायो,
उत्सव मोर न शनि तुहि भायो।

कहन लगे शनि मन सकुचाई,
का करिहौ शिशु मोहि दिखाई।

नहिं विश्वास उमा उर भयऊ,
शनि सों बालक देखन कहऊ।

पड़तहिं शनि दृगकोण प्रकाशा,
बालक सिर उड़ि गयो आकाशा।

गिरजा गिरी विकल ह्वै धरणी,
सो दुख दशा गयो नहिं वरणी।

हाहाकार मच्यो कैलाशा,
शनि कीन्हों लखि सुत को नाशा।

तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधाए,
काटि चक्र सो गज सिर लाए।

बालक के धड़ ऊपर धारयो,
प्राण मंत्र पढ़ि शंकर डारयो।

नाम गणेश शम्भु तब कीन्हें,
प्रथम पूज्य बुद्धि निधि वर दीन्हें।

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा,
पृथ्वी की प्रदक्षिणा लीन्हा।

चले षड़ानन भरमि भुलाई,
रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई।

चरण मातु-पितु के धर लीन्हें,
तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें।

धनि गणेश कहि शिव हिय हरषे,
नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे।

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई,
शेष सहस मुख सके न गाई।

मैं मति हीन मलीन दुखारी,
करहुं कौन बिधि विनय तुम्हारी।

भजत राम सुन्दर प्रभुदासा,
जग प्रयाग ककरा दुर्वासा।

अब प्रभु दया दीन पर कीजै,
अपनी शक्ति भक्ति कुछ दीजै।

॥ दोहा ॥

श्री गणेश यह चालीसा,
पाठ करैं धर ध्यान।
नित नव मंगल गृह बसै,
लहै जगत सनमान॥

सम्वत् अपन सहस्र दश,
ऋषि पंचमी दिनेश।

पूरण चालीसा भयो,
मंगल मूर्ति गणेश॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल